सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२३-२०२४

कक्षा:-तीन **विषय: हिंदी** **पाठ:4 हिमालय कविता**

शब्दार्थ

1)युग युग से -- बहुत समय से

2)डिगना - हिलना

3) प्रण -- प्रतिज्ञा

4)पथ - रास्ता

5)नभ के तारे छूना -- असंभव काम करना है

6)अचल -- स्थिर, जो हिल ना सके

7)मुसीबत -- समस्या

8)जग -- संसार ,दुनिया

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

प्रश्न1) युगों युगों से खड़ा हिमालय क्या बता रहा है ?

उत्तर युगों युगों से खड़ा हिमालय बता रहा है कि हमें किसी भी मुसीबत से घबराना नहीं चाहिए । डटकर उसका सामना करना चाहिए ।

प्रश्न2) 'छू सकते हो नभ के तारे' से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर 'छू सकते हो नभ तारे' से कवि का आशय है कि यदि हम अपने प्रण पर डटे रहे तो हम सफलता की ऊँचाइयों को छू सकते हैं ।

प्रश्न 3)इस जग में किन लोगों को सफलता मिलती है ?

उत्तर इस जग में उन्हीं लोगों को सफलता मिलती है जो लोग लाख मुसीबत आने पर भी अपने मार्ग पर खड़े रहते हैं और उनका सामना करते हैं ।

प्रश्न)4 हिमालय पर्वत से हमें क्या सीख मिलती है ?

उत्तर हिमालय पर्वत से हमें यह सीख मिलती है कि हर मुश्किल का हमे डटकर सामना करना चाहिए और अपने प्रण पर अडिग रहना चाहिए ।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

1)प्रण -- प्रतिज्ञा

मैंने अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखने का प्रण लिया है ।

2)पथ -- रास्ता

हमें अपने माता-पिता के बताए गए पथ पर चलना चाहिए ।

3)मुसीबत -- समस्या

हमें जीवन में आई हर मुसीबत का सामना बहादुरी से करना चाहिए ।

4)अचल - स्थिर

हिमालय अपने स्थान पर युगो युगो से अचल खड़ा है ।